तृतीय अध्याय
आर्ष ग्रन्थ
रामायण, महाभारत एवं पुराण

वैदिक साहित्य तथा लौकिक साहित्य के सन्धि काल में ऐसे दो बृहदाकार आर्ष ग्रन्थों का उदय हुआ जिन्होंने भारतीय साहित्य और समाज को अत्यधिक प्रभावित किया । ये हैं–*रामायण* और *महाभारत* । इनमें रामायण *'आदिकाव्य'* है जबकि महाभारत को *'इतिहास'* कहा जाता है । ये दोनों ही महाकाव्य परवर्ती लौकिक संस्कृत साहित्य के उपजीव्य बने अर्थात् इनकी कथा को आधार बना कर अनेक परवर्ती कवियों ने अपने ग्रन्थों की रचना की । अपने रचना–काल से ही ये दोनों ग्रन्थ महाकाव्य होकर भी धर्मग्रन्थ के रूप में पूजित हुए ।

रामायण–आदिकाव्य रामायण के रचयिता आदिकवि *वाल्मीकि* हैं । इसमें मुख्य रूप से मर्यादा पुरुषोत्तम राम की कथा है । इसमें चौबीस हजार पद्य हैं इसलिए इसे *''चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता''* भी कहा जाता है । प्रारम्भ में रामायण भारत के विभिन्न भागों में सूतों एवं गायकों के द्वारा मौखिक परम्परा से प्रचारित होती रही । अतः इनमें परस्पर पाठभेद होना स्वाभाविक है । इसके अनेक संस्करण हुए । वर्त्तमान रामायण के चार प्रसिद्ध संस्करण मिलते हैं– 1. बम्बई या देवनागरी संस्करण 2. बंगाल संस्करण 3. कश्मीर संस्करण तथा 4. दक्षिण भारत संस्करण ।

कहा जाता है कि क्रौञ्च–पक्षी के जोड़े में से नर के निषाद द्वारा मारे जाने पर क्रौञ्ची के करुण विलाप को सुनकर दयार्द्र वाल्मीकि के मुख से अकस्मात् यह पद्य निकल गया–

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।

यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ।।

तदनन्तर ब्रह्मा की प्रेरणा से उन्होंने राम की कथा की रचना की । रामायण में सात काण्ड हैं – 1. बालकाण्ड 2. अयोध्याकाण्ड 3. अरण्यकाण्ड 4. किष्किन्धाकाण्ड 5. सुन्दरकाण्ड 6. युद्धकाण्ड तथा 7. उत्तरकाण्ड । इसमें राम के जन्म से लेकर उनके महाप्रस्थान तक की कथा विस्तारपूर्वक दी गयी है । साथ ही अन्य अनेक अवान्तर कथाएँ भी हैं । कुछ विद्वानों का मानना है कि वाल्मीकि–रचित रामायण में कुछ अंश प्रक्षिप्त हैं ।

रामायण की रचना महाभारत से पूर्व हो चुकी थी क्योंकि महाभारत में राम की कथा रामोपाख्यान के रूप में है जबकि रामायण में महाभारत की कथा का उल्लेख नहीं है । उसी प्रकार बौद्ध एवं जैन साहित्य में रामकथा का स्पष्ट कथन है जबकि रामायण में इन धर्मों का उल्लेख नहीं है। रामायण में कहीं भी मूर्तिपूजा का वर्णन नहीं है । भारत में मूर्तिपूजा का प्रचलन बुद्ध की प्रतिमाओं के पूजन से आरम्भ हुआ । अतः रामायण का काल वैदिक साहित्य की समाप्ति अर्थात् 700 ई॰ पू॰ और बौद्ध धर्म के उदय अर्थात् 500 ई॰ पू॰ के मध्य माना जा सकता है ।

रामायण एक अत्यन्त लोकप्रिय महाकाव्य है । इसमें पितृभक्ति, पुत्रप्रेम, भ्रातृस्नेह, स्वामिभक्ति, प्रजावत्सलता, कर्तव्यनिष्ठा, पातिव्रत्य, नैतिकता आदि गुणों का प्रतिपादन किया गया है। इसके नायक सर्वगुणसम्पन्न श्रीराम का अत्यधिक धार्मिक महत्त्व है । कहा जाता है कि जिसे राम नहीं देखते और जो राम को नहीं देखता वह लोक में निन्दित है –

यश्च रामं न पश्येत्तु यं च रामो न पश्यति ।
निन्दितः सर्वलोकेषु स्वात्माप्येनं विगर्हते ।।

महाभारत –महाभारत विश्वसाहित्य में सर्वाधिक बड़ा ग्रन्थ है । यह रामायण से लगभग चार गुणा बड़ा है । इसमें लगभग एक लाख श्लोक हैं, इसलिए इसे *"शत–साहस्री संहिता"* कहा जाता है । भारत की राष्ट्रीय ज्ञानसंहिता के रूप में महाभारत वस्तुतः विश्वकोष है जो महाकाव्य भी है, इतिहास भी है और धर्मग्रन्थ भी है । इसमें प्राचीन भारत की ऐतिहासिक, धार्मिक, दार्शनिक राजनीतिक तथा सामाजिक अवस्था का वर्णन है । विपुल विस्तार तथा अत्यधिक महत्त्व के कारण इसे *"पञ्चम वेद"* कहा जाता है । *महाभारत* के रचयिता ***कृष्णद्वैपायन वेदव्यास*** हैं । किन्तु कालान्तर में इस ग्रन्थ में परिवर्त्तन एवं परिवर्धन होते रहे और क्रमशः इसने वर्त्तमान स्वरूप प्राप्त किया । इसके विकास की तीन अवस्थाएँ हैं– जय, भारत और महाभारत । महाभारत का प्रथम मौलिक रूप "जय" नाम से विख्यात था जिसमें 8800 श्लोक थे । द्वितीय अवस्था में जय का विस्तार "भारत" के रूप में हुआ, जिसमें 24000 श्लोक थे।

अन्तिम अवस्था "महाभारत" है । इसमें एक लाख से अधिक श्लोक हैं । यहाँ समस्त विषयों को समाविष्ट करने का प्रयास किया गया है । इसीलिए यह कहा जाता है कि इसमें जो है वह भारतवर्ष में है, इसमें जो नहीं है वह भारत में भी नहीं है– *यन्न भारते तन्न भारते* । महर्षि व्यास भी कहते हैं –

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् ।।

महाभारत के अनेक संस्करण (पाठ–भेद) मिलते हैं जिनमें तीन प्रमुख हैं –कलकत्ता–संस्करण, बम्बई–संस्करण तथा मद्रास–संस्करण । महाभारत अठारह पर्वों में विभक्त है । ये हैं–आदि, सभा, वन, विराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शान्ति, अनुशासन, आश्वमेधिक, आश्रमवासिक, मौसल, महाप्रस्थानिक तथा स्वर्गारोहण । परिमाण तथा विस्तार की दृष्टि से इन पर्वों में पर्याप्त भिन्नता है । यथा बारहवाँ पर्व (शान्ति) श्लोक संख्या (लगभग चौदह हजार) की दृष्टि से सबसे बड़ा और सत्रहवाँ पर्व (महाप्रस्थानिक, लगभग तीन सौ पद्य) सबसे छोटा है । महाभारत में मुख्य रूप से कौरव–पाण्डव की कथा है किन्तु अन्य अनेक शिक्षाप्रद तथा रोचक आख्यान भी हैं जिनमें से कुछ प्रमुख आख्यान निम्नलिखित हैं – *शकुन्तलोपाख्यान, नलोपाख्यान, मत्स्योपाख्यान, रामोपाख्यान, सावित्र्युपाख्यान, शिव्युपाख्यान* इत्यादि ।

इन अठारह पर्वों के अतिरिक्त "हरिवंश" भी महाभारत का अंश है । इसे "खिलपर्व" कहा जाता है । तीन पर्व तथा लगभग सोलह हजार श्लोक

वाले हरिवंश में श्रीकृष्ण के वंश की कथा दी गई है । महाभारत का खिलाध्याय होने से हरिवंश को पुराण कहा जाता है ।

श्रीमद्भगवद्गीता भी महाभारत का ही अंश है । भीष्मपर्व में उपपर्व के रूप में विद्यमान तथा अठारह अध्यायों में विभक्त भगवद्गीता संस्कृत की सर्वाधिक लोकप्रिय रचना है । यह स्वतन्त्र धर्मग्रन्थ तथा दर्शनग्रन्थ के रूप में सर्वत्र समादृत है । इसे सभी उपनिषदों का सार कहा गया है । महाभारत युद्ध में विपक्ष के रूप में अपने सम्बन्धियों को देख अर्जुन के मन में विषाद उत्पन्न होता है और वह युद्ध करने से मना कर देता है । तब श्रीकृष्ण उसे कर्म, ज्ञान और भक्ति का उपदेश देते हैं । उसे निष्काम कर्म तथा संसार की निस्सारता का उपदेश देकर युद्ध के लिए तत्पर करते हैं । यही उपदेश *"भगवद्गीता"* कहलाया । गीता के अध्यायों को *"योग"* कहा गया है जिसका अर्थ है –*समदृष्टि (समत्वं योग उच्यते)* अर्थात् कुशलतापूर्वक कर्म करना ।

वर्तमान रूप में उपलब्ध महाभारत की रचना एक ही समय में नहीं हुई थी, अतः उसके सभी रूपों के लिए एक ही काल निश्चित करना उचित नहीं । विभिन्न साक्ष्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि जय की रचना 800 ई॰ पू॰ तथा भारत की रचना 500 ई॰ पू॰ तथा महाभारत की रचना 200 ई0 पू0 से 100 ई॰ पू॰ के मध्य हुई होगी ।

महाभारत को धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा मोक्षशास्त्र कहा गया है । यह तत्कालीन समाज के लिए आचार–संहिता प्रदान करने वाला ग्रन्थ है। मान्यता

है कि महाभारत के कुछ प्रमुख अंशों (भगवद्गीता, अनुगीता आदि) के श्रवणमात्र से ही समस्त पापकर्मों का नाश हो जाता है । आध्यात्मिक तथा दार्शनिक दृष्टि से भी यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है ।

पुराण– भारतीय वाङ्मय में "पुराण" शब्द का अर्थ प्राचीन धार्मिक कथाएँ हैं। इसका वास्तविक उद्देश्य वेदों के जटिल एवं दार्शनिक उद्देश्यों को ऐतिहासिक तथ्यों तथा आख्यानों के माध्यम से लोकप्रिय बनाना था । किन्तु वैदिक साहित्य में जिन पुराणों का उल्लेख आया है, वे संप्रति अप्राप्य हैं । वर्तमान पुराणों का स्वरूप दार्शनिक या ऐतिहासिक नहीं, अपितु धार्मिक है जिनमें विष्णु या शिव की भक्ति पर बल दिया गया है । पुराण–ग्रन्थ के लक्षण के विषय में कहा जाता है कि इसमें सर्ग (सृष्टि की प्रक्रिया), प्रतिसर्ग (प्रलय तथा पुनः सृष्टि), वंश (देवताओं एवं ऋषियों के वंश), मन्वन्तर (विविध मनुओं की कालावधि) तथा वंशानुचरित (सूर्य तथा चन्द्र वंश का इतिहास) वर्णित है –

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च ।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ।।

कहा जा सकता है कि पुराण के आरम्भ में सर्ग (सृष्टि), अन्त में प्रतिसर्ग (प्रलय) तथा मध्य में विशाल कालखण्डों (मन्वन्तर) एवं राजवंशों का वर्णन है । किन्तु कालान्तर में पुराणों में अन्य अनेक विषयों के समावेश के कारण मूल विषय गौण हो गये । वर्तमान में विष्णुपुराण ही एकमात्र ऐसा पुराण है जिसमें ये लक्षण घटित होते हैं ।

पुराणों की संख्या अठारह है । इसके विषय में एक श्लोक प्रसिद्ध है–

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम् ।

अनापलिंगकूस्कानि पुराणानि पृथक् पृथक् ।।

तदनुसार ''म'' अक्षर से दो पुराण (मत्स्य, मार्कण्डेय), ''भ'' से दो (भविष्य, भागवत), ''ब्र'' से तीन (ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त), ''व'' से चार (विष्णु, वामन, वराह, वायु) तथा अ=अग्नि, ना =नारद, प=पद्म, लिं=लिंग, ग=गरुड़, कू=कूर्म, स्क=स्कन्द–इसप्रकार अठारह पुराण हुए । इन पुराणों का विभाजन इस प्रकार भी किया जा सकता है –

(क) सात्त्विक पुराण (विष्णु से सम्बद्ध) – ***विष्णु, नारद, भागवत, गरुड़, पद्म*** तथा ***वराह*** ।

(ख) तामस पुराण (शिव–सम्बद्ध) – ***मत्स्य, कूर्म, लिंग, शिव, अग्नि*** तथा ***स्कन्द।***

(ग) राजस पुराण (ब्रह्मा से सम्बद्ध) – ***ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, मार्कण्डेय, वामन*** तथा ***भविष्य।***

पुराण भारतीय इतिहास, सभ्यता एवं संस्कृति के विश्वकोष हैं। इनमें दी गई वंशावलियों से प्राचीन भारत के राजनैतिक इतिहास का ज्ञान होता है। किन्तु प्रायः इनमें प्राचीन घटनाओं के वर्णन में अतिशयोक्ति की गई है। महाभारत की तरह पुराण भी एक विकासशील साहित्य है। वैदिक युग के अनन्तर लगभग 500 ई० पू० में पुराण का आरम्भ एक पृथक् साहित्य के रूप

में हुआ। कालक्रम से इसमें विविध विषय जुड़ते गये। इसलिए इसका कोई निश्चित समय नहीं बताया जा सकता है। कुछ पुराण (मार्कण्डेय, ब्रह्माण्ड, विष्णु, भागवत आदि) अपेक्षाकृत अधिक प्राचीन माने गये हैं। किन्तु 1000 ई० तक सभी पुराण तथा उपपुराण पर्याप्त लोकप्रिय हो चुके थे। कुछ प्रमुख उपपुराण हैं– *साम्ब, पाराशर, कपिल, नरसिंह, आदित्य, सौर* इत्यादि।

सरल तथा आकर्षक भाषा में निबद्ध पुराण रामायण एवं महाभारत की भांति परवर्ती कवियों के प्रेरणा–स्रोत रहे हैं। इनका साहित्यिक एवं शैक्षणिक महत्व है। वेदों की शिक्षा का अधिकार सीमित लोगों को था। किन्तु "वेदों के पूरक" के रूप में प्रसिद्ध पुराणों के उपदेश सर्वजनसुलभ थे। जनसामान्य के लिए पुराणों की कथाओं का वाचन होता रहता था जिसे सुनकर सामान्य लोगों को भी नीति, दर्शन, धर्मशास्त्र, काव्यशास्त्र, व्याकरण, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि विषयों का ज्ञान हो जाता था। कथाओं के द्वारा नैतिकता का उपदेश दिया जाता था। कहा भी गया है–

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

पुराणों का धार्मिक महत्त्व भी है क्योंकि ये ईश्वर–भक्ति, मूर्तिपूजा, उत्सव, त्योहार, आचार आदि का सूक्ष्म ज्ञान प्रदान करते हैं। वस्तुतः ये सम्पूर्ण समाज के लिए आचार–संहिता प्रदान करते हैं। पुराणों ने ही पाप और पुण्य कर्मों की

अवधारणा स्पष्ट की। इनमें तीर्थयात्रा पर बहुत बल दिया गया है। भौगोलिक दृष्टि से भी ये बहुत महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि इनमें समस्त भूमण्डल का यथासाध्य ज्ञान देने का प्रयास किया गया है जो ''*भुवनकोश*' कहलाता है। भारत के विभिन्न पर्वतों, नदियों, झीलों, वनों, नगरों आदि का विस्तृत वर्णन भी इनमें है। वस्तुतः ये महान् ग्रन्थ हैं।

अभ्यास

1. रामायण में वर्णित विषय की समीक्षा करें।
2. रामायण का काल–निर्धारण करें।
3. रामायण के प्रमुख संस्करणों का उल्लेख करें।
4. महाभारत के क्रमिक विकास का वर्णन करें ।
5. महाभारत का काल निर्धारण करें।
6. रामायण तथा महाभारत की तुलनात्मक समीक्षा करें।
7. पुराण कितने हैं? इसके महत्व पर निबन्ध लिखें।
8. पुराण के लक्षण क्या हैं? अर्थ स्पष्ट करते हुए विवेचन करें।
9. 'शतसाहस्री' का क्या अर्थ है? अर्थ स्पष्ट करते हुए विवेचन करें।
10. निम्नलिखित श्लोक किस ग्रन्थ के लिए आया है– स्पष्ट करते हुए समीक्षात्मक वर्णन करें।

    मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
    यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।

11. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें–

गीता, हरिवंश, पंचमवेद, उपपुराण, हरिवंश।

वस्तुनिष्ठ–प्रश्न

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्दों द्वारा करें–

(i) रामायण .... की रचना है तथा इसमें .... श्लोक है।

(ii) पुराणों की संख्या .... है।

(iii) महाभारत में .... पर्व हैं।

(iv) गीता महाभारत के .... पर्व से संबद्ध है।

(v) 'चतुर्विंशतिसाहस्री संहिता' .... का अन्य नाम है।

(vi) 'शतसाहस्री' का अर्थ .... है।

2. *स्तम्भ 'क'* को *स्तम्भ 'ख'* से सुमेल करें–

स्तम्भ 'क'	*स्तम्भ 'ख'*
1. रामायण	क. मार्कण्डेय
2. भीष्मपर्व	ख. पुराण
3. पुराण	ग. शतसाहस्री
4. महाभारत	घ. गीता
5. अष्टादश	ङ चतुर्विंशतिसाहस्री